परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके
वर्ष १९९३ में आयोजित अभ्यासवर्ग

(साधनासे जुडे प्रश्नोत्तर, सूक्ष्म आयामसम्बन्धी प्रयोग इत्यादि सहित)

विषयसूची

१. ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय ६

२. भूमिका ८

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' इस चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

अध्याय १ : स्वामी विवेकानंद हॉल, पणजीमें हुआ अभ्यासवर्ग (१०.१.१९९३) ९

* नामजपसे संचित एवं प्रारब्ध न्यून होना १०

* अध्यात्ममें भावनाकी अपेक्षा साक्षिभाव महत्त्वपूर्ण ! १२

* गंगासे पाप नष्ट होते हैं, गुरुसेवासे पाप करनेकी बुद्धि नष्ट होती है । १५

अध्याय २ : स्वामी विवेकानंद हॉल, पणजीमें हुआ अभ्यासवर्ग (१४.३.१९९३) १८

* शिष्यद्वारा गुरुको तन, मन, धन, अर्थात सर्वस्व अर्पण करनेका महत्त्व १८

* नामजप करनेवालोंकी साधना श्रेष्ठ स्तरकी होना २१

* गुरुकी अनुमतिके बिना कुछ भी न करें ! २६

अध्याय ३ : शहनाई हॉल, फोंडामें हुआ अभ्यासवर्ग (११.४.१९९३) ३०

* उन्नत पुरुषोंकी बात माननेपर बुद्धिकी बाधा दूर होती है । ३४

* जीवकी दशा और विशेषताएं * कालानुसार साधना ३४

अध्याय ४ : स्वामी विवेकानंद हॉल, पणजीमें हुआ अभ्यासवर्ग (९.५.१९९३) ४४

* किसी घटनाकी ओर भावना, बुद्धि एवं श्रद्धा के दृष्टिकोणसे देखना ४४

* सन्तोंके आचरणका कारण एवं मात्रा ४६

अध्याय ५ : शहनाई हॉल, फोंडामें हुआ अभ्यासवर्ग (२७.६.१९९३) ५३

* साधकका कष्ट न्यून होनेके विविध कारण एवं गुरुकृपाका महत्त्व ५४

अध्याय ६ : गोवामें सम्पन्न हुआ अभ्यासवर्ग (३०.६.१९९३) ५७

* विश्वकी उत्पत्ति * त्रिगुणोंकी विशेषताएं
* 'मुझे कुछ तो साध्य करना है', यह विचार जानेपर अध्यात्ममें प्रगति होना ६०

अध्याय ७ : मिनेजिस ब्रागांजा हॉल, पणजीमें हुआ अभ्यासवर्ग (१०.१०.१९९३) ६२

* कुछ सन्तोंके शिष्य न होनेके कारण ६४

* अपने मनसे किया, कुलदेवीका व गुरुद्वारा दिया हुआ नामजप करना ६८

* नामजप लिखी गई बहियोंका महत्त्व ६८

अध्याय ८ : सांगलीमें हुआ अभ्यासवर्ग (७.११.१९९३) ७५

* भागवत सम्प्रदायकी उपासना * मठवासियोंका जीवन ७५

* सद्गुरु बन्दरिया समान नहीं; बिल्ली समान शिष्यका ध्यान रखते हैं ! ७५

* मनमें बुरे विचार न आएं, इस हेतु साधना करना आवश्यक ७९

अध्याय ९ : आल्मेदा हाईस्कूल सभागृह, फोंडामें हुआ अभ्यासवर्ग (२६.१२.१९९३) ८५

विषयसूची अन्तर्गत क्रमांक २

अभ्यासवर्गोंमें सुलभ अध्यात्मशास्त्र सिखाकर जिज्ञासुओं एवं साधकों को साधनाके अगले चरणपर ले जानेवाले परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी

'अध्यात्मका प्रसार होनेमें अभ्यासवर्गोंका महत्त्व अनन्य है । प्रवचन अथवा सत्संग की तुलनामें अभ्यासवर्गमें होनेवाले प्रश्न-उत्तरों से जिज्ञासुओं एवं साधकों का शंका समाधान भलीभांति होता है एवं उनकी साधना बढती है । वे साधनाके अगले चरणपर पहुंचते हैं । परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी ने वर्ष १९८६ से वर्ष १९९४ के बीच विविध स्थानोंपर अभ्यासवर्ग लिए । इस ग्रन्थमालाके पहले खण्डमें वर्ष १९९२ में लिए अभ्यासवर्गोंके सूत्र समाविष्ट किए हैं । प्रस्तुत खण्डमें परात्पर गुरु डॉक्टरजीने वर्ष ९३ में लिए अभ्यासवर्गोंके सूत्र समाविष्ट किए हैं ।

'प्रस्तुत ग्रन्थके अध्ययनसे सभीको साधनाके अगले-अगले चरणतक पहुंचने हेतु मार्गदर्शन मिले एवं उसके अनुसार साधना करके सभी इसी जन्ममें ईश्वरप्राप्ति करें', यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !'

– (पू.) श्री. संदीप आळशी (७.१०.२०२०)

डॉ. जयंत आठवलेजीकी 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

'१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका'के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले' सम्बोधित किया जा रहा है ।' इन उपाधियोंके अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें आवश्यक स्थानों पर वैसा उल्लेख किया है ।' – **(पू.) श्री. संदीप आळशी, सनातनके ग्रन्थोंके संकलनकर्ता (२४.७.२०२२)**